मूल्यपरक शिक्षा और बालसाहित्य

अरूण कुमार वर्मा*

शिक्षा, व्यवहार में परिवर्तन लाने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके द्वारा ही बच्चा किसी भी समाज में अपने आप को समायोजित कर आत्मिक और राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा को जब हम बालक के सर्वांगीण विकास से जोड़ते हैं तो शिक्षा से मूल्य निर्माण की अपेक्षा और बढ़ जाती है। कोई भी समाज या राष्ट्र मूल्यों से अलग होकर भौतिक संसाधन का विकास भले ही कर ले लेकिन वह एक सभ्य समाज के दायरे से बाहर हो जाता है। मूल्य, शिक्षा का आवश्यक तत्व है तो 'बाल साहित्य' मूल्य निर्माण का साधन। बाल साहित्य बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उसे शिक्षित करने का कार्य करता है और खासकर मूल्य निर्माण की शिक्षा के क्षेत्र में। बालमन से जुड़ने, उसकी संवेदना को समझने एवं उसके संवेगों के संतुलित विकास के अनुरूप बाल साहित्य के सृजन का उत्तरदायित्व बाल साहित्यकारों एवं प्रकाशकों का है। उसे बच्चों तक पहुँचाने का कार्य सरकार एवं शिक्षण संस्थानों का एवं बच्चों को पढ़ने की प्रेरणा और अवसर की ज़िम्मेदारी हमारे शिक्षक एवं अभिभावक बंधुओं की है।

शिक्षा, व्यवहार परिवर्तन की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके द्वारा ही बच्चा किसी भी समाज में अपने आप को समायोजित कर आत्मिक और राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा को जब हम बालक के सर्वांगीण विकास से जोड़ते हैं तो शिक्षा से मूल्य निर्माण की अपेक्षा और बढ़ जाती है। कोई भी समाज या राष्ट्र मूल्यों से अलग होकर भौतिक संसाधन का विकास भले ही कर ले लेकिन वह एक सभ्य समाज के दायरे से बाहर हो जाता है। मूल्यपरक शिक्षा को ध्यान में रखकर जब हम अपनी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का अवलोकन करते हैं तो **'साविद्याविमुक्तये'** अर्थात विद्या सब प्रकार के बंधनों से मुक्ति देती है एवं **'विद्या ददाति विनयं'** की स्थापना शिक्षा के उद्देश्य के मूल में हम पाते हैं।

* *परास्नातक शिक्षक,* जवाहर नवोदय विद्यालय, सिरमौर, रीवा (म.प्र.) - 486448

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का झुकाव तकनीकी शिक्षा के साथ मूल्यपरक शिक्षा की ओर अग्रसर है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सभी विषयों के प्रश्न पत्र में 'वैल्यू बेस्ड' प्रश्नों को समाहित किया है। मूल्य, शिक्षा का आवश्यक तत्व है तो 'बाल साहित्य' मूल्य निर्माण का साधन। बाल साहित्य के बिना मूल्य निर्माण की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है।

मूल्य निर्माण की प्रक्रिया एक दिन की नहीं है। परिवार, समाज, परिवेश और स्कूल के माध्यम से बच्चों में मूल्य रूपी भवन का निर्माण होता शनै: शनै: सतत होता रहता है। एक अभिभावक जब अपने पाल्य का दाखिला स्कूल में करा देता है तो वह निर्शंचित हो जाता है कि मेरा पाल्य अब स्कूल पहुँच गया है। ऐसे में स्कूल की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। मूल्य निर्माण के विषय में डॉ. कलाम का मत है कि 'बच्चों में मूल्य निर्माण सिर्फ तीन लोग ही कर सकते हैं-माता, पिता एवं शिक्षक।' देश की ज़्यादातर आबादी गाँवों में बसती है। जिसमें अधिकांश माता- पिता जीविका के लिए संघर्षरत् हैं। वे मूल्य क्या हैं? बच्चों में क्या और कैसे मूल्य विकसित करें? इससे वे अनभिज्ञ होते हैं। ऐसे में बच्चों का सर्वांगीण विकास चुनौतीपूर्ण कार्य है।

बच्चों में मूल्य निर्माण का उपयुक्त समय प्राथमिक शिक्षा की अवस्था होती है लेकिन इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि मूल्यपरक शिक्षा पढ़ाने की विषय वस्तु नहीं होती बल्कि यह विषयों में गौण रूप से समाहित होती है। जब हम मूल्य की शिक्षा देते हैं तब वह उपदेश के अधिक करीब आकर असरहीन होने की संभावना तक पहुँच जाती है परंतु बाल साहित्य (कहानी, कविता एवं नाटक आदि) के माध्यम से मूल्य की पहुँच लंबे समय तक स्थाई बनी रहती है। जैसे खरगोश और कछुआ की दौड़, भग्गन गड़ेरिया की कथा एवं 'उठो लाल अब आँखें खोलो, पानी लाई हूँ मुँह धोलो' कविता की याद ज्यों की त्यों बचपन से लेकर आज तक मन और मस्तिष्क पर अंकित है।

बच्चों के मूल्य निर्माण में बाल साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। दादी-नानी की कहानियों से ही बाल साहित्य की शुरूआत हुई। हिंदी में बाल पुस्तकों का विकास भारत की अन्य भाषाओं- बंगला, तमिल, मलयालम और मराठी के बाद हुआ। आज अपार सुविधाओं, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, वैज्ञानिक चेतना के चलते बाल साहित्य में भारी परिवर्तन हुआ है। परी कथा, जादू-टोना, रहस्य-रोमांच वाले यर्थाथ से फंतासी की दुनिया में ले जाने वाले प्रसंगों से बालमन मुक्त हुआ है। बाल कहानियाँ सीधी उपदेशपरक न होकर बाल पाठक को भीतर से बदलकर अधिक संवेदनशील, सरल, मानवीय एवं करूणायुक्त बनने की सीख देती हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। बच्चों के मूल्य निर्माण में बाल साहित्य का कोई सानी नहीं है। इसके साक्ष्य में प्रेमचंद की बाल कहानी 'ईदगाह' का ज़िक्र करना चाहूँगा। इस कहानी में तीन पैसे के चिमटे ने एक ही क्षण में हामिद को हीरो बना दिया। कई पीढ़ियों से बच्चों में संवेदना जगाते हुए आज भी यह कहानी त्याग और सद्भाव जैसे मूल्यों का निर्माण कर रही है। सुदर्शन की 'हार की जीत' जिसमें

बाबा भारती के घोड़े को खड्ग सिंह धोखे से ठग लेता है, उस समय बाबा उससे कहते हैं 'बस मेरी एक प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी से न कहना।' जब खड्ग सिंह उनकी बात न समझ सका तो बोला 'इसमें क्या डर है?' बाबा ने उत्तर दिया 'लोगों को इस घटना का पता चला तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।' बच्चों में ऐसे मूल्य सृजन की आवश्यकता है। वर्तमान तकनीकी के युग में ऑडियो-वीडियो, इंटरनेट, डिजिटल एवं ई-पुस्तकों के प्रयोग ने बाल साहित्य को प्रभावित किया है। शहरी स्कूल और जागरूक अभिभावकों तक ये माध्यम काफ़ी रचनात्मक सामाग्री पहुँचा रहे हैं। ग्रामीण अंचल का विद्यार्थी इन माध्यमों और बाल साहित्य के अभाव में दूरदर्शन तक ही सीमिति रह जाता है। दूरदर्शन पर बाल कार्यक्रम तो प्रसारित होते हैं परंतु बड़ों के साथ वे भी तड़क-भड़क और मारपीट के कार्यक्रम या फ़िल्में ही देख पाते हैं जिसके प्रभाव से उनकी बाल सुलभ भावनाओं का ह्रास होने लगता है और इसके प्रभाव से वे असमय ही बड़े बन जाते हैं।

बाल साहित्य के संदर्भ में अक्सर यह तथ्य सामने आता है कि बाल साहित्य का अभाव है। उपभोक्तावादी प्रभाव के चलते यह बात आंशिक रूप से सत्य भी हो सकती है फिर भी बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ज़रूरत है उन्हें प्रकाश में लाने की। हिंदी साहित्य के अनेक साहित्यकारों ने बाल साहित्य का सृजन किया है। सूर-तुलसी की बाल सुलभ रचनाएँ आज भी बच्चों को रिझाती हैं। *रवीन्द्र नाथ टैगोर, प्रेमचंद, सुभद्रा कुमारी चौहान, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, निर्मल वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, पंत, केदारनाथ अग्रवाल, अमृतलाल नागर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, सूर्यकुमार पाण्डेय, शकुंतला गिरोठिया, बालशौरे रेड्डी, शेरजंग गर्ग, बाल स्वरूप राही, द्रोणवीर कोहली, श्री प्रसाद* आदि ने बालमन को छूने वाले साहित्य का सृजन किया है। गाँधी और नेहरू ने बच्चों को बहुत महत्व दिया है। नेहरू जी जब दूर होते थे तो पत्रों के माध्यम से इन्दिरा गाँधी की बाल भावनाओं का पोषण करते थे। आज भी उनके पत्रों का संकलन 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' से संकलित हैं और बाल जिज्ञासाओं के पोषण में सहायक हो सकते हैं। पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरितसागर आज भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

बाल साहित्य के अंतर्गत बाल पत्रिकाओं का विशिष्ट स्थान है। 1917 से ही 'बालसखा' का प्रकाशन शुरू हो गया था। बालसखा के साथ बानर और मेला को भी याद किया जाता है। 'बालभारती' का प्रकाशन 1948 से लगातार हो रहा है। चंदामामा, पराग, नंदन, बालहंस, स्नेह, चकमक, चंपक, विज्ञान, विज्ञान प्रगति आदि पत्रिकाएँ मनोरंजन के साथ-साथ मूल्यपरक शिक्षा में सहायक हैं। माई फ्रेंड गणेशा, हनुमान, हनुमान रिटनर्स, घटोत्कच, बाल गणेश आदि टी वी कार्यक्रम बाल मनोरंजन के स्वस्थ आयाम स्थापित कर रहे हैं। बालमन को ध्यान में रखकर सिनेमा भी बनाए गए हैं जो मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इस क्रम में नन्हे-मुन्ने, जागृति, मुन्ना, बूट पालिश, तूफ़ान और दीया, अब दिल्ली दूर नहीं, काबुलीवाला, दोस्ती, मासूम, ब्लूअंब्रेला, इकबाल, मकड़ी, तारे ज़मीं पर, चिल्लर पार्टी, स्टेनली का डिब्बा आदि का नाम लिया जा सकता है।

बाल साहित्य का सृजन बच्चों के मनोरंजन एवं मूल्य निर्माण को ध्यान में रख कर किया जाता है। बाल साहित्य सत्य, अहिंसा, करूणा, प्रेम, भाईचारा, मानव सेवा, सदाचार, शांति, देश प्रेम, वसुधैव च कुटुंबकम आदि मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देते रहते हैं। आज नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है जो कहीं न कहीं हमारी व्यवस्था में बदलाव की ओर संकेत करता है। वर्तमान की न्यूक्लियर फ़ैमली सिस्टम ने बच्चों के अकेलेपन को बढ़ाया है जिसके कारण वह अपने को टी वी, वीडियो गेम और इंटरनेट से जोड़ लेता है। उसके मनमाने प्रयोग से उसके बाल सुलभ स्वभाव और बाल चेष्टाएँ परिवर्तित होने लगती हैं। ऐसे में अभिभावक एवं शिक्षक की ज़िम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन की ओर प्रेरित करें।

भारत जैसे देश में जहाँ अधिकांश माता-पिता शिक्षा से वंचित हैं अध्यापक की ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है। 'क्यों तनाव ग्रस्त है शिक्षा व्यवस्था' में जगमोहन सिंह राजपूत ने इस ज़िम्मेदारी की ओर संकेत करते हुए लिखा है- "शिक्षा में नैतिक मूल्यों का स्थान कमज़ोर हुआ है, यह सर्वविदित है। मूल्य के सृजन तथा विकास की ज़िम्मेदारी अध्यापकों की ही है। अत: अध्यापकों को इस तैयारी के संदर्भ में प्रशिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व सर्वोपरी हो जाता है। स्कूलों तथा शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रमों में मूल्यों की शिक्षा को उचित स्थान देने की प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए।"*

बाल साहित्य बच्चों के संवेगों का संतुलित विकास करता है। इस तथ्य की सत्यता के साथ आवश्यक है कि बच्चों तक 'किस तरह का' और 'किस तरह से' बाल साहित्य को पहुँचाया जाए। किस तरह का बाल साहित्य बच्चों को दिया जाए यह कार्य अभिभावक और शिक्षकों को निश्चित करना है कि हम ऐसे बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ या पढ़ने के लिए प्रेरित करें जो बच्चों में वैज्ञानिक एवं सकारात्मक सोच विकसित करने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का पोषण कर सकें। पुस्तकालय में बाल साहित्य की उपलब्धता और ग्रामीण अंचल में प्राथमिक स्तर पर पुस्तकालय की व्यवस्था हमारी सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 में प्राथमिक शिक्षा के संचालन का अधिकार ग्राम पंचायत को दिया है। विकेन्द्रीकरण के हिसाब से यह महत्वपूर्ण कदम है। ग्राम लाइब्रेरी की व्यवस्था और उसका संचालन ग्राम सभाओं को दिया जाए तो इससे शिक्षा में सुधार के साथ-साथ हम बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ सकेंगे। इससे बच्चों में ज्ञान का विस्तार तो होगा ही साथ ही बच्चों में पढ़ने की प्रवृत्ति भी विकसित होगी। स्कूल, ग्राम पंचायत एवं न्याय पंचायत स्तर पर बाल गोष्ठियों का आयोजन एवं बच्चों को पुरस्कृत करने से उनकी सृजनशीलता का प्रेरणात्मक विकास होगा। इस कार्य को हमारे अध्ययनशील शिक्षक बंधु अच्छे बाल साहित्य का चयन कर 'उपदेश से उदाहरण भला' की सीख से सही दिशा दे सकते हैं।

*(राजपूत जे. एस., *क्यों तनावग्रस्त हैं शिक्षा व्यवस्था*, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008, पृष्ठ-146)

बाल साहित्य बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उसे शिक्षित करने का कार्य करता है और खासकर मूल्य निर्माण की शिक्षा के क्षेत्र में। बालमन से जुड़ने, उसकी संवेदना को समझने एवं उसके संवेगों के संतुलित विकास के अनुरूप बाल साहित्य के सृजन का उत्तरदायित्व बाल साहित्यकारों एवं प्रकाशकों का है। उसे बच्चों तक पहुँचाने का कार्य सरकार एवं शिक्षण संस्थानों का एवं बच्चों को पढ़ने की प्रेरणा और अवसर की ज़िम्मेदारी हमारे शिक्षक एवं अभिभावक बंधुओं की ही है। निश्चित ही बच्चा बाल साहित्य से जुड़ेगा और मूल्यवान भारत के सोपानों में वृद्धि होगी।